

झारखण्ड जहां कोयले के भंडार भरे पड़े हैं, वो झारखण्ड जब सौर ऊर्जा के लिये जाता है, तब दुनिया के लिये एक नई मिसाल पैदा करता है, एक नया संदेश देता है। उस अर्थ में न सिर्फ हिन्दुस्तान पूरी दुनिया इस बात को समझे कि मैं उस प्रदेश के खट्टी नाम की छोटी सी जगह से बोल रहा हूं, जिस प्रदेश की अधिक आबादी मेरे आदिवासी भाई-बहनों की है। जिन्होंने जंगलों की सदियों से रक्षा की है। जहां कोयले के भंडार पड़े हैं उस प्रदेश की जनता विश्व के मानव कल्याण के लिये, आज सौर ऊर्जा पर जाने का संकल्प कर रहा है, इस लिये मैं विशेष रूप से आया हूं, झारखण्ड

को बधाई देने आया हूं। हमारे यहां शास्त्रों में इन विषयों पर हजारों साल पहले बहुत सी बातें कही गई हैं। ऋषियों में पांच हजार साल पहले महत्वपूर्ण संदेश कहा गया है। ऋषियों में कहा है 'सूर्य आत्मा जगतास तथुषः' कहने का तात्पर्य यह है कि भगवान सूर्य चल और अचल की आत्मा है। चल हो या अचल हो अगर उसकी कोई एक आत्मा है तो वो भगवान सूर्य है। उस सूर्य शक्ति की ओर आज विश्व का ध्यान गया है। भारत ने सपना देखा है 175 गीगा वॉट भारत में पहले जब बिजली की चर्चा होती थी। हिसाब-किताब में गीगा वॉट से आगे नहीं होती थी।

का ही होता था। पहली बार देश गीगावाट की चर्चा करने लगा है, पहली बार और जब मैं दुनिया के सामने कहता हूं कि 2022 जब हिन्दुस्तान की आजादी के 75 साल होंगे, हम 175 गीगावाट रिन्यूवल एनर्जी के अंदर हम सफलता प्राप्त करेंगे। आने वाले पांच-दस साल में हम पूरे विश्व का नेतृत्व सौर शक्ति के विकास के साथ करेंगे। यह हमारे लिए स्वर्णिम काल होगा। इस अनंत शक्ति का पूरा विश्व उपयोग करेगा जबकि हमारे पास इसकी अधिकता भी होगी और तकनीक भी।

-नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

सोलर एनर्जी ऊर्जा का अनंत श्रोत

>> सूर्य से ही संचालन देश में भी ऊर्जा की असीम संभावना

सौर ऊर्जा वह उर्जा है जो सीधे सूर्य से प्राप्त की जाती है। सौर ऊर्जा ही मौसम एवं जलवायु का परिवर्तन करती है। वहीं धरती पर सभी प्रकार के जीवन (पेड़-पौधे और जीव-जन्म) का सहारा है।

भले ही सूर्य पृथ्वी से 15 करोड़ किलोमीटर दूर हो, लेकिन है बहुत शक्तिशाली उसकी ऊर्जा के बोहद दूर हिस्से से हमारी तमाम ऊर्जा जल्दी ही पूरी हो सकती है। देश के ग्रामीण इलाकों में बिजली आपूर्ति मुश्वेला करने की दिशा में यह तकनीक बढ़ाव कारगर साबित हो सकती है, खेड़ों के मूत्राबिक, केंद्र सरकार ने हरित ऊर्जा स्रोतों को विकसित करने के मकसद से पांच विलियन डालर के कोष की स्थापना का निर्णय लिया है, इस कार्योंजान के तहत ऊर्जा सुरक्षा को व्यूप्रिट तैयार किया गया है इसके लिए पूर्व में निर्धारित मकसद को बढ़ाव देते हुए वर्ष 2022 तक एक लाख में से 10 सौलर ऊर्जा की क्षमता को कागम करने का लक्ष्य रखा गया है, इसके लिए सम्बन्धित अन्य संगठनों, निगमों, संस्थाओं आदि से सहयोग लिया जायेगा।

सौर ऊर्जा से बिजली बनाने में हम भले ही चीन से 10 साल पीछे हों, लेकिन हमारे देश में ऐज्युकेशन संसाधनों से हम उसका मत तक पहुंच सकते हैं उनमें सौर ऊर्जा संवर्तन को सबसे कम समय में स्थापित करते हुए उत्पादन शुरू किया जा सकता है न्युक्लियर या थर्मल पावर प्लाट लगाने में कीरीब 10 वर्षों का समय लग जाती है, जबकि सोलर पावर प्रोजेक्ट्स महज एक से दो साल के भीतर तैयार हो जाता है, सौर ऊर्जा (अमेरिका विश्व ग्रोबल सोलर ऊर्जा एन्जीरिंग सर्विस कर्फ्म, जो सोलर फोटोवोल्टिक प्रोजेक्ट्स में सक्रिय है) के प्रशिक्षण प्रोजेक्ट्स और भारत में कंपनी के संचालन के मुश्विया पश्चात गोपालन के हवालों से 'द हन्दू' के एक रिपोर्ट में बताया गया है कि फिलहाल सोलर उद्योग का आरंभिक काल है और भारत में इसके लिए स्वर्णिम अवसर मौजूदा है भारत



सौर ऊर्जा से नवीन ने 10 हजार किमी की दूरी तय की

भारतीय मूल के एक इंजीनियर ने सौर ऊर्जा से चलित अपने टुक-टुक से कीरीब 10 हजार किलोमीटर (6200 मील) का सफर पूरा करके वह को बिटेन पहुंचा। भारत में जये ऊर्जा ने ऑस्ट्रेलिया की नामिकरिता ले ली है, वहां वह ऑटोमोटिव इंजीनियर है।

नवीन रबेली

■ नवीन रबेली इस साल फरवरी में भारत निकले थे और वह इंडैन्ड के डॉकर नामक कसबे में तथ समय से पांच दिन पहले ही पहुंच गए।

■ वह कहते हैं कि प्लूल से चलने वाली टुक-टुक को सौर

ऊर्जा से चलने वाली टुक-टुक में परिवर्तित करने का ख्याल उड़े तब आया जब वह अपने एक दोस्त के साथ एक साथ एक ट्रैकिं जाम में फंस गए थे और उनके चारों तरफ बड़ी संख्या में तेज आवाज करने वाले और प्रदूषण फैलने वाले टुक-टुक

थे।

■ भारत से अपने सफर की शुरुआत करने वाल वह ईनान, तुक्क, बुलारिया, सिर्विया, अस्ट्रिंगा, रिट्टजररेंड, जर्मीनी और फ्रांस होते हुए इंडैन्ड पहुंचे। उन्होंने दुनिया को सकेत दिया कि अने वाला समय सौर शक्ति का ही।



के लिए इस क्षेत्र में बेहतरीन मौका इसलिए भी है, क्योंकि दुनिया भर में पैदा की जानेवाली सोलर एनर्जी का 90 फीसदी से ज्यादा हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन मदद से पैदा की जाती है और हजारों कमनियां हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन का उत्पादन करती हैं, इतना ही नहीं, इसमें इत्मेमाल की जानेवाली ज्यादातर ऊर्जाओं का उत्पादन देश में घरेलू स्तर पर ही होता है। पॉलिसिकॉन कल्यान के लिए इस क्षेत्र में बेहतरीन मौका इसलिए भी है, क्योंकि दुनिया भर में पैदा की जानेवाली सोलर एनर्जी का 90 फीसदी से ज्यादा हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन मदद से पैदा की जाती है और हजारों कमनियां हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन का उत्पादन करती हैं, इतना ही नहीं, इसमें इत्मेमाल की जानेवाली ज्यादातर ऊर्जाओं का उत्पादन देश में घरेलू स्तर पर ही होता है। पॉलिसिकॉन कल्यान के लिए इस क्षेत्र में बेहतरीन मौका इसलिए भी है, क्योंकि दुनिया भर में पैदा की जानेवाली सोलर एनर्जी का 90 फीसदी से ज्यादा हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन मदद से पैदा की जाती है और हजारों कमनियां हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन का उत्पादन करती हैं, इतना ही नहीं, इसमें इत्मेमाल की जानेवाली ज्यादातर ऊर्जाओं का उत्पादन देश में घरेलू स्तर पर ही होता है। पॉलिसिकॉन कल्यान के लिए इस क्षेत्र में बेहतरीन मौका इसलिए भी है, क्योंकि दुनिया भर में पैदा की जानेवाली सोलर एनर्जी का 90 फीसदी से ज्यादा हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन मदद से पैदा की जाती है और हजारों कमनियां हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन का उत्पादन करती हैं, इतना ही नहीं, इसमें इत्मेमाल की जानेवाली ज्यादातर ऊर्जाओं का उत्पादन देश में घरेलू स्तर पर ही होता है। पॉलिसिकॉन कल्यान के लिए इस क्षेत्र में बेहतरीन मौका इसलिए भी है, क्योंकि दुनिया भर में पैदा की जानेवाली सोलर एनर्जी का 90 फीसदी से ज्यादा हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन मदद से पैदा की जाती है और हजारों कमनियां हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन का उत्पादन करती हैं, इतना ही नहीं, इसमें इत्मेमाल की जानेवाली ज्यादातर ऊर्जाओं का उत्पादन देश में घरेलू स्तर पर ही होता है। पॉलिसिकॉन कल्यान के लिए इस क्षेत्र में बेहतरीन मौका इसलिए भी है, क्योंकि दुनिया भर में पैदा की जानेवाली सोलर एनर्जी का 90 फीसदी से ज्यादा हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन मदद से पैदा की जाती है और हजारों कमनियां हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन का उत्पादन करती हैं, इतना ही नहीं, इसमें इत्मेमाल की जानेवाली ज्यादातर ऊर्जाओं का उत्पादन देश में घरेलू स्तर पर ही होता है। पॉलिसिकॉन कल्यान के लिए इस क्षेत्र में बेहतरीन मौका इसलिए भी है, क्योंकि दुनिया भर में पैदा की जानेवाली सोलर एनर्जी का 90 फीसदी से ज्यादा हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन मदद से पैदा की जाती है और हजारों कमनियां हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन का उत्पादन करती हैं, इतना ही नहीं, इसमें इत्मेमाल की जानेवाली ज्यादातर ऊर्जाओं का उत्पादन देश में घरेलू स्तर पर ही होता है। पॉलिसिकॉन कल्यान के लिए इस क्षेत्र में बेहतरीन मौका इसलिए भी है, क्योंकि दुनिया भर में पैदा की जानेवाली सोलर एनर्जी का 90 फीसदी से ज्यादा हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन मदद से पैदा की जाती है और हजारों कमनियां हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन का उत्पादन करती हैं, इतना ही नहीं, इसमें इत्मेमाल की जानेवाली ज्यादातर ऊर्जाओं का उत्पादन देश में घरेलू स्तर पर ही होता है। पॉलिसिकॉन कल्यान के लिए इस क्षेत्र में बेहतरीन मौका इसलिए भी है, क्योंकि दुनिया भर में पैदा की जानेवाली सोलर एनर्जी का 90 फीसदी से ज्यादा हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन मदद से पैदा की जाती है और हजारों कमनियां हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन का उत्पादन करती हैं, इतना ही नहीं, इसमें इत्मेमाल की जानेवाली ज्यादातर ऊर्जाओं का उत्पादन देश में घरेलू स्तर पर ही होता है। पॉलिसिकॉन कल्यान के लिए इस क्षेत्र में बेहतरीन मौका इसलिए भी है, क्योंकि दुनिया भर में पैदा की जानेवाली सोलर एनर्जी का 90 फीसदी से ज्यादा हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन मदद से पैदा की जाती है और हजारों कमनियां हिस्सा क्रिस्टलाइन सिलिकॉन का उत्पादन करती हैं, इतना ही नहीं, इसमें इत्मेमाल की जानेवाली ज्यादातर ऊर्जाओं का उत्पादन देश में घ

